कर्मयोगी सन्त – डॉ. हैनीमैन

डॉ. ब्रहमानंद आचार्य

सन् 1755 का वह वर्ष जब तीस साल के लम्बे युद्ध के पश्चात जर्मनी की अर्थव्यवस्था, शिक्षा, साहित्य यहां तक कि वे सब गुण, जिनसे कोई भी देश गौरवान्वित हो सकता है, प्राय: लुप्त हो चले थे। उसी वर्ष युद्ध की विभिषिकाओं के मध्य घिरे ड्रेस्डेन शहर बारह मील दूर पश्चिम में बसे गेरान नामक कस्बे में मिट्टी के बर्तन की रंगाई का व्यवसाय करने वाले एक गरीब परिवार में 10/11 अप्रैल की मध्य रात्रि को एक लड़के ने जन्म लिया, जिसका नाम फ्रेड्रिक सैमुअल हैनीमैन रखा गया।

बालक सैमुअल के माता- पिता इतने गरीब थे कि अपने बालक को बारह वर्ष तक स्कूल में दाखिला ही न करा सके। तेरह वर्ष की उम्र में सर्वप्रथम इस बालक को टाउन स्कूल में पढ़ने भेजा गया।

होनहार विरवान के होत चोकने पात, कहते हैं कि सैमुअल बाल्यकाल में ही इतने प्रखर बुद्धि के थे कि अपनी कक्षा के ही सहपाठियों को ग्रीक भाषा पढ़ने का कार्य इनके शिक्षकों ने उन्हें सौप रखा था। तभी तो जब सैमुअल के पिता ने गरीबी के कारण इनका स्कूल छुड़वा कर उन्हें एक फैक्ट्री में धनोपार्जन हेतु लगाया तो स्कूल के शिक्षकों ने इनके घर जा कर इन्हें पुनः स्कूल भेजने के लिए आग्रह किया, इतना ही नहीं उनका शुल्क भी माफ कर दिया।

कुछ समय पश्चात बालक सैमुअल को प्रिंसेस स्कूल भेज दिया गया।

"आप सम्मानित एवं विद्वान श्रोताओं में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो ईश्वर के अस्तित्व को उसकी बनाई दुनिया से पहचान सकें। दुनिया की संरचना तो क्या मात्र मानव शरीर की रचना ही ईश्वर के अस्तित्व का बोध कराते है।"

ये विचार मात्र सोलह वर्ष की अल्पायु में प्रिंसेस स्कूल में अयोजित विदाई समारोह की विशाल सभा में उस बालक ने व्यक्त किए, जिसके बाद में विश्व को एक ऐसी चिकित्सा पद्धति 'होम्योपैथी' का उपहार दिया, जो अन्य पद की अपेक्षा कम खर्च एक न केवल रोगी को रोग मुक्त करती है, बल्कि पूर्ण स्वास्थ्य भी प्रदान करती है।

सन् 1775 में 20 वर्ष की अल्पायु में जब सैमुअल हैनीमैन लिपजिग आए तो उनके पिता मात्र 20 थेलर्स मुद्रा ही उनकी रहगुज के लिए दे सके। लिपजिग में सैम्युअल जर्मन और फ्रेंच पढ़ाकर अपना खर्च निकालते थे। इसके अलावा वे शोध- पत्रों और किताबों आदि का अनुवाद करके भी अपनी जरूरत के लिए कुछ धन कमा लेते थे। 22 वर्ष की आयु में ही वे ग्रीक, लैटिन, इंगलिश, इटैलियन, हिचू, सीरियाई, स्पैनिश, जर्मनी आदि अनेकों भाषाओं के ज्ञाता हो गए थे। चिकित्सा के क्षेत्र में आने की उनकी लालसा थी। लिपजिग में कोई अस्पताल न होने के करण सैमुअल वियाना चले आये, जहां ब्रदर्स ऑफ मरसी अस्पताल से जुड़े। वहाँ से महारानी मेरी थेरेसा के चिकित्सक डॉ. क्वैपरिन के कृपा पात्र हो गए।

सैमुअल हैनीमैन को चिकित्सा के क्षेत्र में लाने का श्रेय इन्हीं **'डॉ० वान कवैरिन'** के ही है जो अपने निजी मरीजों को देखते समय सैमुअल हैनीमैन को अपने साथ ही रखते थे।

इसी बीच उनकी जमा पुंजी उन्ही के एक साथी द्वारा चुरा ली गई, जिससे उन्हें अत्यधिक आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ा, तभी ट्रांसलवेनिया के गर्वनर वैकेन्थल ने उन्हें अपने परिवारीय चिकित्सक व अपनी निजी लायब्रेरी के देख- रेख कर्ता के रूप में **हर्म्सस्टड्स** चलने का प्रस्ताव रखा, जिसे हैनीमैन ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस प्रकार न

केवल उनकी आर्थिक समस्या हल हो गयी,बल्कि उन्हें **कोलेट्रस** साइंसेज के बारे में जाने - पढ़ने का अवसर भी मिल गया। किन्तु डेढ़ वर्ष पश्चात ही वे इरलैंगन आ गये, जहाँ उन्होंने होफ्राथ से वनस्पति शास्त्र का अध्ययन किया। यह भी एक संयोग है कि हैनीमैन ने अपने 24वें जन्मदिवस पर पेट के रोगों पर अपना शोध प्रस्तुत कर इरलैंगन विश्वविद्यालय से '**डॉक्टर ऑफ मेडिसिन**' की उपाधि प्राप्त की।

1779 में डॉ० हैनीमैन ने मेन्सफेड़ के देश हटेस्टन में अपनी मेड़िकल प्रैक्टिस की शुरुआत की। 1781 में वे डेसाऊ आ गये और 1781 के अन्त में ही मेग्डी वर्ग के निकट गोभर्न में मेंड़िकल ऑफिसर हो गये।

27वर्ष की अवस्था में हैजलर फार्मेसी में रसायन शास्त्र का अध्ययन करते हुये उन्होंने हैनरीर क्यूचलर नामक युवती से पहला विवाह रचाया।

डॉ० हैनीमैन उस समय में प्रचलित चिकित्सा पद्धति से असंतुष्ट रहते थे। इसका प्रमाण उनके अपने एक निबन्ध '**ए स्कुलैप्रियर्स इन वैलन्स** (1805)' में मिलता हैं । इसी के बाद उनका रुझान चिकित्सा क्षेत्र से हटता गया। 1792 तक इधर- उधर भटकने के बाद हैनीमैन वोथा आ गये । यह समय उनका संघर्ष का था, तथा कुछ समय बाद वे मात्सकेल्विन आ गये वहाँ से दस माह बाद मैक्लाहर तत्पश्चात गोइटिसन और फिर मिरमोट फिर ब्रांसविक फिर क्रोरनीन - स्लटर आ गये। 1799 में उनके परिवार की संख्या 10 हो गयी इसी वर्ष में वे हेम्वर्ग आये फिर 1801 में मैकहार्न और फिर एलनबर्ग आ गये।

इसी बीच हैनीमैन उपहास का कारण भी बने। उन्होंने सन् 1800 में एक नए क्षारीय नमक की खोज करने का यह कहकर दावा किया कि उसकी औषधीय शक्ति अत्यधिक है, किन्तु विशेषज्ञों ने उस नएनमक को पहचान लिया, वह और कुछ नही, बल्कि साधारण बोरेक्स था। डॉ० हैनीमैन की सादगी इस बात से परिलक्षित होती हैं कि उन्होंने अपनी इस भूल को तत्काल स्वीकार ही नही किया, बल्कि अपने इस दावे के लिये सार्वजनिक रूप से क्षमा भी मांगी। उनके शत्रुओं को तो एक अच्छा बहाना उनकी बदनामी करने के लिए मिल ही गया था।

फिर वेड़ेसेऊ में वे अपनी पत्नी के ही घर आ गये और फिर जल्दी ही टोगऊ आ गये।

हैनीमैन की जीवनी लिखने वाले डॉ. रिचर्डहेल का कहना है कि हैनीमैन द्वारा प्रतिपादित नई चिकित्सा प्रणाली होम्योपैथी की नींव का पत्थर कूलेन्स मैटेरिया मेड़िका में निहित था। सन् 1790 में जब डॉ. हैनीमैन विलियम कुलेन्स की मेटेरिका मेड़िका का अंग्रेजी से जर्मन भाषा में अनुवाद कर रहे थे। तब इसके पेज संख्या 468 व 672 में लिखें कुलेन के इस विचार को उन्होंने चुनौती दी कि सिंकोना बार्क का पेटपर टॉनिक प्रभाव होता हैं। इस सत्यता कोजाँच के लिए उन्होंने 4 ड्रॉम सिंकोना जूसदिन में दो बारलेना शुरू कर दिया, इससे उनके शरीर में सिंकोना बार्क के बुखार आदि के लक्षण पैदा हो गये। उन्हें पता था कि कुनैन मलेरिया के रोगी को दी जाती हैं।

इस प्रकार हैनीमैन के मस्तिष्क में यह विचार आया कि कोई पदार्थ स्वस्थ शरीर में जो प्रभाव डालता है, वही रोग के समान लक्षणों को नष्ट करने की शक्ति रखता हैं।

1790 से 1805 तक वे इसी तथ्य का विभिन्न पदार्थो द्वारा परीक्षण करते रहे यधपि इस मध्य हैनीमैन ने सात स्थान व शहर बदले ।1796 में हैनीमैन ने इस तथ्य का सफल परीक्षण कर लिया। तत्पश्चात उन्होंने अपनी इस नई खोज को हुफलैण्ड्रस जर्नल ने अपने एक लेख के माध्यम से सार्वजनिक रूप दिया।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक औषधीय पदार्थ स्वस्थ शरीर में एक प्रकार का रोग उत्पन्न करता हैं और जितना अधिक शक्तिशाली पदार्थ होता हैं ।

उतना अधिक तेज रोग के लक्षण उत्पन्न करता हैं। उन्होंने आगे कहा हमें प्रकृति से शिक्षा लेनी चाहिये जो कभी-कभी

रोगों को अपने प्रभाव से स्वतः ठीक कर देती है, उसी प्रकार जो दवा उसी के समान कृत्रिम लक्षण पैदा करने योग्य है; वही रोगी में पाये जाने वाले असली लक्षणों को भी समाप्त कर देगी।

उन्होंने इसे सिमिलिया सिमलिब्स क्यूरेन्टर का नाम दिया इस प्रकार उन्होंने तत्कालीन कन्ट्रेरिया **कन्ट्रेरिक्यूरेन्टर** नियम को अस्वीकार कर दिया।

इस प्रकार होम्योपैथी का जन्म 1796 में हुआ।

डॉ. हैनीमैन ने सन् 1806 में ' 'मेडिसिन ऑफ एक्सपीरिन्सेज' व 1810 में 'आर्गनन ऑफ रेशनल आर्ट ऑफ हीलिंग' नामक पुस्तकें प्रकाशित की, जिसे होम्योपैथी की ' बाईविल' के नाम से जाना जाता हैं। इस किताब में उन्होंने होम्योपैथिक सिद्धान्त व कार्यपद्धति का विवरण दिया तथा तत्कालीन प्रचलित पद्धति एलोपैथी के दोषों की बड़ी आलोचना की।

इस किताब के प्रकाशन ने तो हैनीमैन का जीना मुश्किल कर दिया । चूँकि उन्होंने एक स्थापित पद्धति की आलोचना की थी। अतः उनके ही साथी एलोपैथिक चिकित्सक उनके प्रबल शत्रु हो गये। न केवल उनके खिलाफ पर्चे बाँटे गये, बल्कि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी उनकी नयी व आश्चर्यजनक खोज की हंसी उड़ाई गयी।

ब्रैडफोर्ड के शब्दों में तब से आज तक चिकित्सा से सम्बन्धित कोई भी ऐसी पुस्तक नही छपी, जो इतनी विवादास्पद रही हो।

सन् 1811 में हैनीमैन ने 'मैटेरिया मेड़िका प्यूरा' नामक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें उन्होंने विभिन्न पदार्थों को स्वस्थ मानवो को दिये जाने पर प्राप्त लक्षणों का रिकार्ड सामने रखा और इसे 'ड्रग प्रूविंग' कहा।

डॉ. हीनार्थ व **डॉ. साईमन** आदि ने तो इनकी पद्धति की खिलाफत के लिये जर्नल तक छापना शुरू कर दिया। विरोध सिर्फ लेखन तक ही नही रहा, बल्कि निजी पद्धति को अपनी दवायें देने के कारण, हैनीमैन के छह शिष्यों को जेल तक भेज दिया गया। इतना ही नहीं, उनके दवाओं के बक्सों को सार्वजनिक समारोह के मध्य जलाया गया।

इतने तीव्र विरोध के बाद भी हैनीमैन को लिपजिंग विश्व विद्यालय में ब्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया। सन् 1812 में सर्वप्रथम डॉ० हैनीमैन ने लिपजिंग विश्वविघालय में सप्ताह में दो दिन अपनी पद्धति पर व्याख्यान प्रारम्भ किया, यघपि इन व्याख्यानों में उन्हें अपने समर्थक बनाने में ज्यादा सफलता नही मिली, पर इसके माध्यम से ऐसे सहयोगी अवश्य मिल गये जो 'ड्रग प्रूविंग' में सहयोग कर सकते थे।

सन् 1820 में तो फार्मासिस्टों के दबाव में आकर सेक्सन की सरकार ने तो हैनीमैन द्वारा दबा दिये जाने पर ही पाबन्दी लगा दी ।

इन्हीं फार्मासिस्टों ने हैनीमैन को कुछ समय पूर्व फार्मासिस्टों की प्रायोगिक किताब' एपोथिकेरिज लेकिस्ट्योन' नामक पुस्तक लिख जाने पर 'फार्मासिस्टों का मसीहा' कहा था।

बाद में इन्हीं फार्मासिस्टों द्वारा कोर्ट में अपील करने पर हैनीमैन पर आर्थिक दण्ड़ लगाए गये। अन्ततः विजय सत्य की ही होती है, बाद में इन्हीं फार्मासिस्टों ने अपनी गलती स्वीकार की और हैनीमैन द्वारा प्रतिपादित नियमों के आधार पर होम्योपैथिक दवाओं का नियम भी प्रारम्भ कर दिया।

लिपजिंग से निकाल देने व रखे जाने के विषय में उनके विरोधियों व अनुयायियों में टकराव बढ़ता जा रहा था, अतः वे1821 **कोपथन** आ गये।

हैनीमैने ने अपने विरोधियों के पागलपन का बढ़ी दृढ़ता से सामना किया।

उन्हीं के शब्दों में चिकित्सक मेरे भाई है, मै उनके समक्ष कोई व्यक्तित्व नही हूँ, मैं अपनी इस विजय यात्रा में पड़ने वाली बाधाओं की परवाह नही करता। जिस महान उद्देश्य को लेकर मैं चला हूँ, उसने मेरे जीवन का आनंद रहित होने

से बचा लिया।'

2 अप्रैल 1821 में कोपथन के ड्यूक ने हैनीमैन को अपनी दवायें बनाने व बेचने की अनुमति का अधिकृत पत्र जारी किया रॉयल कोटे फिजीशियन के रूप में भी डॉ० हैनीमैन को नियुक्त कर दिया गया।

डॉ० हैनीमैन का रोग का सिद्धान्त छूटा परसोरा का वर्णन तो पुनःमखौली का कारण बना।

10 अप्रैल1829 को लिपजिंग में ही होम्योपैथिक चिकित्सकों की प्रथम सोसायटी बनी।

31 मार्च 1830 को हैनीमैन की पत्नी की मृत्यु हो गयी। 1834 में मेरी मिलैवी ~~धनवान थी, बल्कि एक कलाकार व~~ डिहार्वली नामक फ्रेंच महिला से उन्होंने दूसरा विवाह किया। मेरी न केवल कवियित्री भी थी। सुन्दरता को महानता व महानता को सुन्दरता भाई। 80 वर्ष की अवस्था में हैनीमैन ने 35 वर्षीय मेरी से विवाह किया। वह इन्हें 1835 में फ्रान्स ले आई। ये पेरिस में प्रेक्टिस करने लगे। फ्रान्स में इन्होंने अपनी शिक्षा व अनुभव का सही मापने में फल पाया और शान्ति, सुख, यश, धन, प्रभाव, आदि सभी कुछ पाया, जिसके लिये व्यक्ति दुनिया में जन्म लेता हैं।

2 जुलाई 1843 को 88 वर्ष की अवस्था में प्रातः 5:00 बजे मसीहा हैनीमैन ने अन्तिम सांस ली।

वह बालक जो गरीबी में पला, वह विधार्थी जो पढ़ाकर अपना खर्च चलाता रहा, वह व्यक्ति जो 24 शहरों व कई देशों में घूम रहा, जिसने लगभग 90 दवाओं की प्रूविंग की, 12 वाल्यूम किताब के लिखे, 70 मौलिक निबन्ध लिखे, 24 वाल्यूम का अनुवाद किया। 5000 से भी अधिक पन्नों का प्रकाशन किया, ऐसा व्यक्ति अन्त में यह कहते हुये दुनिया से विदा हो गया कि " मैं अनावश्यक ही न जिया"।

एक गाँव में जन्मा जर्मन बालक दुनिया के मशहूर शहर पेरिस में जाकर मरा। एक प्रणाली का पिता कहलाया। स्कूल का एक गरीबविधार्थी हजारों लाखों के शिक्षक के रूप में नहीं मिटा पाता था, हजारों लाखों की रोजी - रोटी बना।

आज पेरिस में कोपथन में, लिपजिंग में न केवल डॉ. हैनीमैन के स्मारक हैं, बल्कि अमेरिका, जहाँ उन्होंने कभी पैर नहीं रखा, फिर भी उनकी मृत्यु पर अमेरिकन सरकार ने 4000 डालर्स खर्च करके उनका स्मारक बनवाया और राष्ट्रीय पर्व की भाँति उस स्मारक का स्थापना समारोह मनाया गया, जिसमें खुद तत्कालीन राष्ट्रपति **नैक्नाली** भी शामिल हुए। इस अवसर पर व्वाइट हाउस में राष्ट्रपति द्वारा हजारों अतिथियों को आमंत्रित किया गया और बैंक की धुने बजाई गई।

लेखक -
डॉ० बी० एन० आचार्य
39/29, मैस्टर्न रोड,
कानपुर-208001